॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

वर्ष : 18 अंक : 19 10 अक्टूबर 2018 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर का त्रिदिवसीय सम्मेलन सम्पन्न

उदयपुर। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर का त्रिदिवसीय सम्मेलन दिनांक 6, 7 व 8 अक्टूबर 2018 को नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर में उल्लासपूर्वक आयोजित किया गया जिसमें देश भर के अनेक वैदिक विद्वानों एवं आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना अतुलनीय योगदान प्रदान किया।

सत्यार्थप्रकाश महोत्सव में उपस्थित देशभर के आर्य व कार्यक्रम को संबोधित करते सिक्किम के राज्यपाल।

दिनांक 6 अक्टूबर 2018 को कार्यक्रम का उद्घाटन ओ३म की ध्वजा फहरा कर सिक्किम के महामहिम राज्यपाल माननीय श्री गंगाप्रसाद ने किया। 21वें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में शनिवार को राज्यपाल गंगाप्रसाद ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी भाषा को सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का एकमात्र उपाय माना। उन्हीं का प्रभाव था कि मेवाड़ के राजकीय अभिलेखों में देवनागरी लिपि का प्रयोग प्रारंभ हुआ। महर्षि का मन्तव्य था कि एक धर्म, एक भाषा, एक समान व्यवहार एवं एक लक्ष्य से ही स्वराज्य की प्राप्ति संभव है। उनके द्वारा गुलाबबाग स्थित नवलखा महल में रचित सत्यार्थ प्रकाश एक आदर्श आचार संहिता के रूप में हमारा मार्गदर्शन करता है। इसमें मनुष्य मात्र को अपने कर्तव्य, अकर्तव्य, धर्म-अधर्म, भक्ष्य-अभक्ष्य का सम्यक बोध होता है। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने न केवल राजाओं बल्कि आम लोगों को भी अपने उद्देश्यों से लाभान्वित किया एवं बांसवाड़ा, डूंगरपुर जैसे आदिवासी क्षेत्रों में गोविन्द गुरु जैसे कई समाज सुधारक उत्पन्न हुए जिन्होंने समाज को अंधविश्वासों एवं पाखण्डों से दूर हटाने का कार्य किया।

सम्मेलन में अमेठी के डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने वेदों को भाषा एवं लिपि से भी प्राचीन बताते हुए कहा कि वेद समस्त मनुष्य समाज के लिए हैं एवं ये किसी मत मतान्तर आदि का समर्थन नहीं करते हुए मानव मात्र के कल्याण की कामना करते हैं।

अतिथियों का स्वागत श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य ने किया।

6 अक्टूबर 2018 को कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय फतहनगर, उदयपुर एवं वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आबू रोड़ के छात्र-छात्राओं ने अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज, आबू रोड़ के प्रधान श्री मोतीलाल आर्य ने की।

दिनांक 6.10.18 को राष्ट्रीय चिंतन सम्मेलन के मुख्य अतिथि जर्नादन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंग थे एवं प्रमुख सान्निध्य श्री प्रकाश आर्य, महामंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि, नई दिल्ली, श्री रविन्द्र श्रीमाली, अध्यक्ष नगर विकास न्यास, उदयपुर, श्री त्रिलोक पूर्बिया, पूर्व विधायक उदयपुर की रही तथा मुख्य वक्तागण आचार्य वेदप्रिय शास्त्री, डॉ. देवशर्मा वेदालंकार, दिल्ली एवं भजनोपदेश श्री केशवदेश शर्मा, सुमेरपुर एवं श्री योगेश दत्त बिजनौर के रहे। कार्यक्रम का संयोजक व श्री सत्यप्रिय शास्त्री, उपप्रधान आर्य समाज उदयपुर का रहा।

अपने उद्गार प्रकट करते डॉ. चक्रकीर्ति सामवेदी।

सम्मेलन के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि श्री सुरेश चन्द्र आर्य, दिल्ली एवं अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर थे। सम्मेलन में प्रमुख सान्निध्य प्रो. पी.के. दशोरा, पूर्व कुलपति कोटा विश्वविद्यालय, श्री बी.एल. अग्रवाल, जयपुर, श्री रासासिंह रावत, पूर्व सांसद अजमेर, श्री जयदेव आर्य, राजकोट एवं श्री भरत भाई ओमप्रकाश, अहमदाबाद का रहा तथा प्रमुख वक्तागणों में आचार्य वेदप्रकाश क्षोत्रिय, दिल्ली एवं डॉ. आचार्य सोमदेव शास्त्री, मुम्बई रहे।

इस अवसर पर श्री वेदप्रकाश क्षोत्रिय ने सत्यार्थ प्रकाश के महत्व पर उल्लेखनीय प्रकाश डाला तथा डॉ. सोमदेव शास्त्री ने महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में विमान निर्माण से संबंधित तथ्यों पर ऐतिहासिक जानकारी देते हुए बताया कि तत्कालीन बम्बई के शिवकर बापू तलपदे ने 1895 में ही विमान का अविष्कार कर उसका सफल प्रयोग बम्बई के चौपाटी पर किया था जो कि तब जमीन से 1700 फीट की ऊंचाई तक 15-20 मिनट तक उड़ा था परंतु तत्कालीन अंग्रेज सरकार की नीतियों के फलस्वरूप श्री तलपदे को आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हुई एवं उनके विमान निर्माण की इस तकनीक को इंग्लैण्ड की रैली ब्रदर्स ने कौड़ियों के भाव खरीद लिया तथा यह अविष्कार अपने नाम दर्ज करवा लिया। कार्यक्रम का संयोजन श्री ओमप्रकाश वर्मा प्रधान, आर्य समाज, किशनपोल बाजार जयपुर ने किया।

कार्यक्रम के विशेष सत्र में आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन

एवं सत्यार्थ प्रकाश पर महत्वपूर्ण प्रस्तुतियां दी गई। कार्यक्रम में महर्षि दयानन्द बाल विद्या मंदिर, भीलवाड़ा एवं महर्षि दयानन्द बी.एड. कॉलेज, जयपुर के छात्र-छात्राओं द्वारा अत्यन्त सारगर्भित प्रस्तुतियां दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, जिसके प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी हैं, के उप-प्रधान डॉ. अनिल आर्य एवं अध्यक्ष आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर के मंत्री डॉ. चक्रकीर्ति सामवेदी थे। इस अवसर पर भीलवाड़ा के छात्र-छात्राओं द्वारा योग का प्रदर्शन किया गया तथा महर्षि दयानन्द बी.एड. कॉलेज, जयपुर के विद्यार्थियों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर आधारित एक नाटिका एवं भजन आदि प्रस्तुत किए। बी.एड. कॉलेज के विद्यार्थियों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के विरजानन्द के पास अध्ययन हेतु पहुंचने एवं उनको गुरु दक्षिणा देने तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा वेदों के पुनर्रुद्धार, विभिन्न मत-मतान्तरों के समर्थकों से ईश्वर के विषय में शास्त्रार्थ आदि का नाटिका के माध्यम से प्रभावपूर्ण प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का निर्माण महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सुनीता भाटिया एवं व्याख्याता श्रीमती मधु यादव के मार्गदर्शन में किया गया। बी.एड. कॉलेज के विद्यार्थी अजय, अविनाश, अजीत, कमलकिशोर, संजय एवं कुलदीप आदि नाटक के मुख्य किरदारों में थे।

बी.एड. कॉलेज, जयपुर के विद्यार्थियों के साथ डॉ. चक्रकीर्ति, डॉ. अनिल आर्य, किशनलाल गहलोत एवं व्याख्याता मधु यादव।

इस अवसर पर अपने वक्तव्य में डॉ. अनिल आर्य ने समस्त विश्व की आर्य समाजों को एकता के सूत्र में बांधने पर बल दिया।

डॉ. चक्रकीर्ति सामवेदी ने सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए उपनिषदों में दिए गए शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षा का लक्ष्य अध्यात्म की प्राप्ति है एवं इस हेतु आचार्य का मार्गदर्शन एवं स्वाध्याय अत्यन्त आवश्यक है।

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी।

सामवेदी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में आर्य समाज के योगदान का भी वर्णन करते हुए बताया कि उन्हें गर्व है कि उनकी अर्धांगिनी डॉ. शालिनी उस परिवार से आती हैं जिसने मथुरा में श्री अमरलाल जोशी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वामी विरजानन्द के पास अध्ययन के दौरान रहने एवं खाने-पीने की पूर्ण व्यवस्था की थी। इसी प्रकार पं. रामप्रसाद बिस्मिल के लखनऊ जेल के दौरान जेलर रहे चम्पालाल जी भी उसी परिवार के सदस्य थे जिनकी सहृदयता का वर्णन बिस्मिल ने अपनी पुस्तक में भी किया है। कार्यक्रम का संयोजन श्री संजय सत्यार्थी, बिहार ने किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री किशनलाल गहलोत, महर्षि दयानन्द भवन न्यास, जोधपुर थे।

इसके पश्चात संस्कृति एवं संस्कार सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि श्री फूलसिंह मीणा, विधायक ग्रामीण उदयपुर थे एवं साध्वी उत्तमायति, दिल्ली, साध्वी पुष्पा सरस्वती, भिवाड़ी व श्री प्रदीप आर्य, पूर्व अध्यक्ष नगर विकास न्यास, अलवर आदि मुख्य वक्तागण थे। कार्यक्रम का संयोजन सुश्री डॉ. सीमा श्रीमाली, चित्तौड़गढ़ ने किया। इस अवसर पर साध्वी पुष्पा सरस्वती ने समाज में व्याप्त ढोंग एवं पाखण्ड पर खुलकर प्रहार किया एवं इससे बचने का एकमात्र उपाय आर्य समाज की शिक्षाओं को बताया।

सत्र को सम्बोधित करते हुए साध्वी पुष्पा सरस्वती।

कार्यक्रम के अंतिम दिवस 8 अक्टूबर 2018 को यज्ञशाला में आयोजित आध्यात्मिक सत्र के ब्रह्मा एवं प्रवचन कर्त्ता आचार्य वेदप्रकाश क्षोत्रिय, दिल्ली थे एवं कार्यक्रम का संयोजन उदयपुर के श्री इन्द्रप्रकाश ने किया। इस अवसर पर आचार्य क्षोत्रिय ने गायत्री की महिमा पर प्रकाश डाला एवं यज्ञ के लाभों का वर्णन अत्यन्त सारगर्भित वेद मंत्रों के माध्यम से प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि गायत्री का स्मरण करने से उपासक को विलक्षण बुद्धि एवं ईश्वर की प्रार्थना से मनोवांछित सिद्धि प्राप्त होती है।

8.10.18 को आयोजित अंतिम सत्र के अंधविश्वास निर्मूलन सम्मेलन एवं समापन समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी थे। अध्यक्षता श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के न्यासी खुशहालचन्द्र आर्य, कोलकाता ने की। कार्यक्रम में प्रमुख सान्निध्य श्री टी.सी. डामोर, पूर्व कुलपति राजीव गांधी जनजाति विश्वविद्यालय, श्री सोमरत्न आर्य, अजमेर, श्री त्रिभुवन जी मुख्य सम्पादक दैनिक भास्कर, उदयपुर एवं श्री एम.एल. गोयल पूर्व क्षेत्रीय निदेशक, डी.ए.वी. राजस्थान का रहा। स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर देश भर में व्याप्त अंधविश्वास एवं पाखण्ड पर कड़ा प्रहार करते हुए बताया कि उन्होंने देश-विदेश में ऐसे अनेकों फिल्म अभिनेताओं, राजनेताओं, विद्वानों एवं वैज्ञानिकों को देखा है जो कि स्वयं भी अंधविश्वास के भयंकर समर्थक हैं तथा इससे समस्त समाज को अत्यन्त हानि हो रही है। उन्होंने पशु बलि तथा तथाकथित बाबाओं तथा संन्यासियों द्वारा आम जनता को चमत्कारों के आधार पर ठगे जाने से बचने का आह्वान किया तथा इन सभी पाखण्डों आदि से बचाव हेतु आम जनता को सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय के प्रति जागरूक करने पर जोर दिया।

इस अवसर पर न्यास के विभिन्न कार्यों में अपनी महती भूमिका निभाने एवं अपने द्वारा रचित साहित्य न्यास को नि:शुल्क उपलब्ध करवाने हेतु श्रीमती सरोज वर्मा, जयपुर को शॉल, श्रीफल एवं महाराणा प्रताप की प्रतिमा से सम्मानित किया गया।

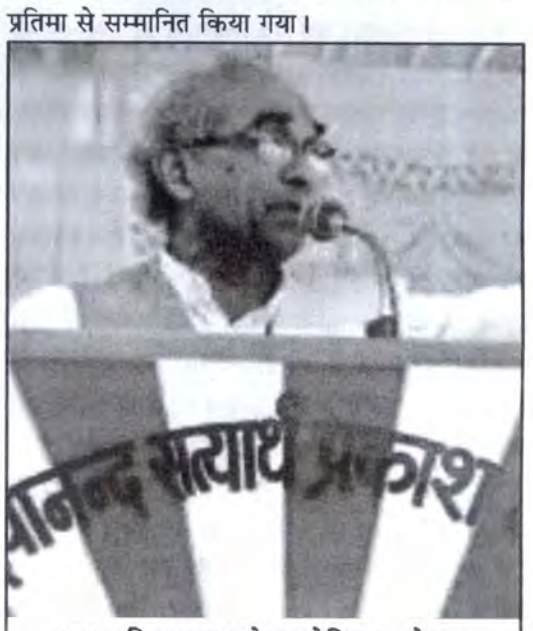

आध्यात्मिक सत्र को सम्बोधित करते हुए आचार्य वेदप्रकाश क्षोत्रिय।

समझें सत्य और अहिंसा का महत्त्व

महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा को केन्द्र में रखते हुए ही समाज निर्माण का सपना संजोया था। उनके एकादश व्रत सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शरीर-श्रम, अस्वाद, अभय, सर्वधर्म सम्भाव, अस्पृश्यता-निवारण और स्वदेशी का विचार आज पहले से भी अधिक प्रासंगिक है।

सवाई सिंह, गांधीवादी कार्यकर्ता

आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती है, जिसे हमारे देश में सरकार और विभिन्न संगठन उत्साह से मना रहे हैं। दुनिया के दूसरे देशों में भी उनकी जयन्ती मनाई जा रही है। उन्हें यह दुनिया छोड़े हुए लगीाग 71 वर्ष होने वाले हैं। इसके बावजूद उनके विचारों की प्रासंगिकता बढ़ती ही जा रही है। आज दुनिया भर में बढ़ती हिंसा का जवाब गांधीजी की अहिंसा में ही निहित है। इसलिए ही वैश्विक संगठन यूएन ने आज के दिन को अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का तय किया हुआ है, लेकिन जो परिस्थितियां बनी हैं, उनमें एक दिन अहिंसा दिवस मनाने से काम नहीं चलेगा, ना ही एक दिन नशे की दुकाने बंद करने से जीवन बनेगा। अब तो अहिंसा का संकल्प और नशा न करने का संकल्प ीाी आज के दिन लेना होगा।

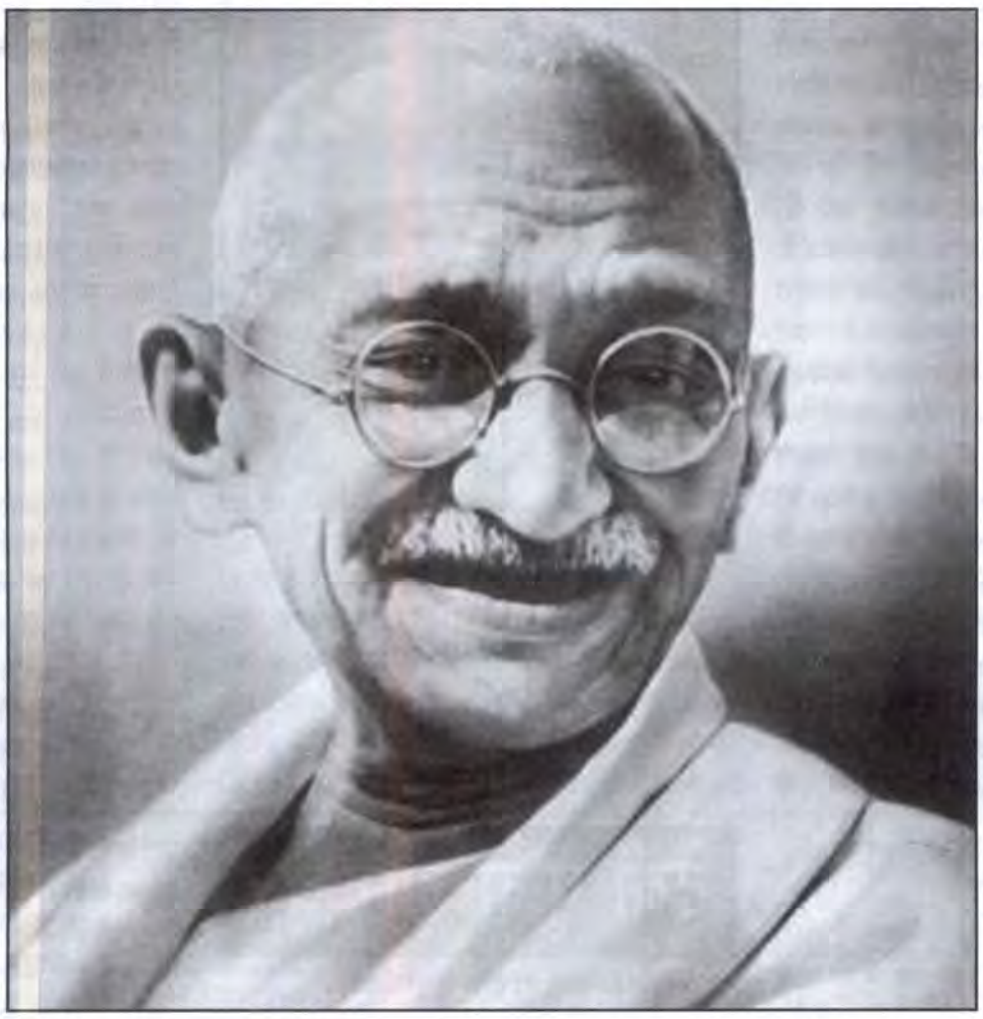

बापू का सत्य के प्रति इतना आग्रह था कि उन्होंने अपनी जीवनी का नाम भी सत्य के प्रयोग रखा। आज हालात ऐसे नजर आ रहे हैं, जैसे सत्य और अहिंसा जीवन से खो गए हों। झूठ के प्रयोग को सफल करने के लिए माहौल इस तरह से बनाया जाता है कि झूठ आत्मविश्वास से बोलो, जोर से बोलो और सौ बार बोलो। जर्मनी के तानाशाह हिटलर के प्रचार मंत्री गोयबल्स ने जर्मनी में यही बात शुरू की थी कि झूठ को सौ बार बोलोगे तो वह सत्य लगने लगेगी। अंग्रेजी में इसे कहा गया कि 'रिपीट ए लाई हनड्रेड टाईम्स, बिकम इन ट्रूथ', लेकिन उस झूठ के अभियान से लाखों लोग अवश्य मारे गए परंतु लम्बे समय तक न तो वहां तानाशाह जीवित रह पाया और ना ही सत्य को जीत पाया। जर्मनी के लोगों की समझ और इच्छाशक्ति इतनी प्रबल थी कि जर्मनी को विभाजित करने वाली दीवार को भी दोनों देशों के लोगों ने मिलकर तोड़ दिया और जर्मनी एक हो गया। बापू के नेतृत्व में भी आजादी की लड़ाई सम्पूर्ण देश ने एक साथ लड़ी थी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में ही कराची और लाहौर में भी वैसे ही सत्याग्रह चले थे, जैसे दिल्ली और बम्बई में। वैसे आजादी के लिए तब की कांग्रेस ने लाहौर और कराची में भी प्रस्ताव लिए थे। जैसे यहां की सभा में प्रस्ताव लिए गए थे। आज दोनों ही देशों के सत्ताधीश और सत्ता चाहने वालों ने दोनों ही देशों में झूठ और नफरत से ऐसा माहौल बनाया है जैसे दोनों देशों की जनता एक दूसरे की दुश्मन हो। असलियत में यह राजनीतिक हथकंडा है, जैसा षड्यंत्र अंग्रेजों ने भारत और पाकिस्तान को बनाने में किया था। दोनों देशों की जनता के बीच जो फासला पैदा किया गया है, उसकी वजह सियासत है। दोनों देशों के लोगों की बोली, भाषा और रहन-सहन में बहुत ज्यादा समानता होने से विदेशों में वे आपस में जुड़े हुए नजर आते हैं। मुश्किल यह है कि जो घृणा दो देशों के नागरिकों के बीच पैदा की गई, अब उसी तरह की घृणा देश के भीतर धर्म के नाम पर पैदा की जा रही है। बापू के जन्मदिन पर हम यह संकल्प लें कि नफरत को अपने जीवन से निकालकर समाज में शांति और सौहार्द्र का माहौल पैदा करने पर ध्यान देंगे। झूठ के जरिए किसी समुदाय विशेष के खिलाफ अभियान नहीं चलाएंगे। तभी सही मायने में देश विकास करेगा, इस संकल्प से ही सत्य और अहिंसा पर छाये हुए कोहरे को हटाया जा सकता है।

गांधीजी के ये दो मूलमंत्र सत्य और अहिंसा केवल आजादी प्राप्त करने के हथियार नहीं थे, बल्कि ये ऐसे मूलमंत्र हैं, जिनसे निजी जीवन में भी शांति और विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। वे सत्य को ही ईश्वर मानते थे। साथ ही सत्य एवं अहिंसा को एक सिक्के के दो पहलू मानते थे। हमारे यहां के अधिकतर राजनेताओं ने तो यह मान लिया है कि सत्ता की राजनीति के लिए सत्य और अहिंसा का रास्ता अव्यावहारिक है। गांधीजी कहते थे कि सिद्धांतविहीन राजनीति सामाजिक पाप है। आज हमारे नेता मानते हैं और व्यवहार में उतारते हैं कि सिद्धांत की राजनीति पाप है। आए दिन होने वाले दलों के समझौते यही संदेश देते हैं।

महात्मा गांधी ने अपने सम्पूर्ण विचार में सत्य और अहिंसा को केन्द्र में रखते हुए ही समाज निर्माण का सपना संजोया था। उनके एकादश व्रत सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शरीर-श्रम, अस्वाद, अभय, सर्वधर्म सम्भाव, अस्पृश्यता-निवारण और स्वदेशी का विचार आज पहले से भी अधिक प्रासंगिक हैं। उनके राष्ट्र निर्माण के लिए अठारह रचनात्मक कार्य कौमी एकता, अस्पृश्यता-निवारण, शराबबंदी, खादी, ग्रामोद्योग, गांव की सफाई, बुनियादी तालीम, प्रौढ़ शिक्षा, स्त्रियों की भागीदारी, आरोग्य के नियमों की शिक्षा, प्रान्तीय भाषाओं का विकास, राष्ट्र भाषा का विकास, आर्थिक समानता, किसान की समृद्धता, मजदूरों के हित उद्योग में भागीदारी, आदिवासियों को मुख्य धारा में लाना, कुष्ठ रोगी और विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम चलाना आज अधिक आवश्यक हो गए हैं। महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों को हमारे सत्ताधीश हाथ में लेते, तो ना तो आज सामाजिक विकारों का सामना करना पड़ता और ना ही बेकारी, भ्रष्टाचार, असमानता और सांप्रदायिकता की चुनौती खड़ी होती।

हमने महात्मा गांधी की दिशा और दृष्टि के एकदम विपरीत भौतिकतावाद के रास्ते को अपनाया। भौतिकतावाद के केन्द्र में पूंजी होती है, जो केन्द्रित अर्थनीति को जन्म देती है। केन्द्रित अर्थनीति के केन्द्र में कुछ ही लोग होते हैं, वे अपने और अपनों के हित के लिए ही योजना बनाते हैं और सत्ता से बनवाते हैं। इसी प्रक्रिया में सत्ता और पूंजीपतियों का गठजोड़ बनता है इस गठजोड़ से ही राजनीति से पैसे से राजनीति और राजनीति से पैसे बनाने की प्रवृत्ति विकसित होती है। अगर योजनाओं के केन्द्र में पूंजी के बजाय अंतिम व्यक्ति होता तो महात्मा गांधी के सपने के अनुसार समतामूलक समाज बनने की प्रक्रिया तेज होती और सभी का समान रूप से विकास होता। आज देश के कुछ प्रतिशत लोगों का तो विकास हुआ है और अधिसंख्यक संकट के घेरे में है। इस नीति के परिणामस्वरूप ही कॉरपोरेट्स ने देश की दिशा तय कर दी है। ये कॉरपोरेट्स अपने हित की नीतियों का निर्माण करवाते हैं और उन्हीं को चलवाते हैं। यह सब इसलिए संभव है कि राजनीति भी केंद्रित है। जिन लोगों के हाथ में सत्ता है, वे उस पर पकड़ बनाए रखना चाहते हैं।

महात्मा गांधी सत्ता की लगाम जनता के हाथ में रखने के पक्ष में थे, लेकिन सत्ता दलों के हाथ में आई और दलों में लोकतंत्र नहीं रहा। इसलिए देश में भी लोकतंत्र के लिए खतरा पैदा हो गया है। ऐसी स्थिति में महात्मा गांधी के मूल्यों और मान्यताओं की स्थापना के लिए नई लड़ाई लड़नी होगी।

सादगी की मिसाल

- **सत्यनारायण सिंह,** पूर्व आईएएस

महात्मा गांधी ने कहा था 'व्यक्ति को अपने बुनियादी मूल्य नहीं छोड़ने चाहिए। अपनी जिम्मेदारी, दायित्व और नैतिक मूल्यों का अहसास बुनियादी मूल्य हैं। कोई भी व्यक्ति जो राष्ट्रहित को प्रमुखता देता है और अपने तात्कालिक लाभ से ऊपर उठ कर समाज को देख रहा है, तो वह आदर्श व्यक्ति है।' लाल बहादुर शास्त्री ऐसे ही आदर्श व्यक्ति थे। लाल बहादुर शास्त्री ने कठिन परिश्रम, सादगी, सदाशयता, शालीनता और दृढ़ता जैसे गुणों का विकास करके महानता अर्जित की। उनके लिए पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, 'उच्चतम व्यक्तित्व वाले, निरंतर सजग और कठोर परिश्रमशील व्यक्तित्व का नाम है- लालबहादुर शास्त्री।'

लाल बहादुर शास्त्री का जीवन यथार्थ के धरातल से विकसित हुआ। बाल्यावस्था के संस्कारों ने उनके जीवन पर व्यापक प्रभाव डाला। उन्होंने अपरिग्रह को अपनाया व आजीवन निभाया। वे राष्ट्रीय नेताओं जैसे तिलक, महात्मा गांधी आदि के भाषण सुनने मीलों दूर जाते थे। लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित लोकसेवक समाज के सदस्य बन कर दलितों, हरिजनों, किसानों और मजदूरों की सेवा में जुट गए थे। लाला लाजपतराय ने उनको कहा था, 'लोक सेवकों को बुनियाद के पत्थर के समान भूमिका निभानी चाहिए'। शास्त्री जी उम्रभर लोक सेवक की तरह आम लोगों की सेवा में लगे रहे। कभी वर्तमान दौर के नेताओं की तरह अपने व्यक्तित्व व कृतित्व को प्रचारित कराने का प्रयास नहीं किया। अपने प्रचार के लिए पैसा पानी की तरह नहीं बहाया। उन्होंने जीतेजी अपने परिवार में से किसी को राजनीति में आगे बढ़ने की न तो प्रेरणा दी और न ही सहारा दिया।

पं. जवाहरलाल नेहरू के सम्पर्क में आने के पश्चात वे अपनी मेहनत के बल पर कांग्रेस के महामंत्री बने। नेहरू के साथ जेल में रहे। पं. गोविन्द बल्लभ पंत ने उन्हें यू.पी. पार्लियामेंटी बोर्ड का सचिव बनाया। जब वे रेल मंत्री बने, रेलों के सुधार के लिए प्रयास किया। रेल दुर्घटना होने पर मंत्री पद से त्यागपत्र देकर सबके सामने

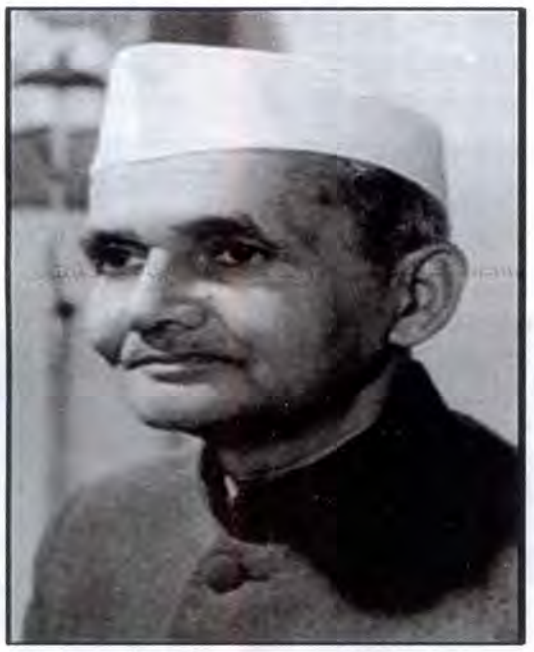

एक मिसाल पेश की।

आजादी के आंदोलन के दौरान जब वे जेल गए तो वहां उन्होंने, टाल्सटॉय, मार्क्स, लेनिन, बर्नार्ड शा आदि को पढ़ा। मैडम क्यूरी की जीवनी का हिन्दी अनुवाद किया। विभिन्न नेताओं के साथ रह कर उनकी दृष्टि समदर्शी हो गई।

लाल बहादुर शास्त्री मिट्टी से उठे और हिमालय की चोटियों को छुआ। पन्द्रह अगस्त, 1965 को लाल किले से प्रधानमंत्री के रूप में शास्त्रीजी ने कहा था, ''हम रहे या न रहें लेकिन यह झण्डा रहना चाहिए।'' प्रधानमंत्री की हैसियत से शास्त्रीजी युगोस्वालिया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो, मिश्र के राष्ट्रपति नासेर, पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खां से मिले। नेपाल, रूस, कनाडा, ब्रिटेन की यात्रा की। सुरक्षा साधन जुटा कर सेना का मनोबल बढ़ाया। पाक द्वारा अचानक प्रारंभ किए गए युद्ध के दौरान अनाज संकट से निपटने के लिए सभी भारतवासियों को सोमवार का व्रत रखने को प्रेरित किया और कहा 'अन्न बचाकर आयात कम करें, अस्त्र बनाएंगे शस्त्र बनाएंगे अपनी लड़ाई खुद लड़ेंगे। राष्ट्र को स्वावलंबी और समर्थ बनाएंगे।' उन्होंने इसीलिए जय जवान जय किसान का नारा दिया। उनके आह्वान से देश एकता के सूत्र में बंध गया।

तीन जनवरी, 1966 को पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति अयूब खां से बातचीत के लिए ताशकंद पहुंचे, उनके पास उनका खादी का पुराना कोट था। रूसी प्रधानमंत्री कोसिगन ने भयंकर ठण्ड को देखते हुए उपहार में एक रूसी कोट भेंट किया। शास्त्री जी मीटिंग में अपने पुराने कोट में ही गए, कोसिगन ने झिझकते हुये पूछा क्या उन्हें उपहार में दिया गया कोटा पसंद नहीं आया। शास्त्री जी का जवाब था 'आपका कोट वाकई शानदार है, परंतु मैंने उसे अपने स्टाफ के कर्मचारी को दे दिया, जिसके पास कोट नहीं था, निश्चित ही मध्य एशिया की आगामी यात्राओं में वह कोट मैं पहन कर आऊंगा।' कोसिगन ने एक कार्यक्रम में इस घटना को सुनाते हुए कहा था, 'हम कम्युनिस्ट हैं, लेकिन शास्त्री जी तो सुपर कम्युनिस्ट हैं।' देश का दुर्भाग्य यह रहा कि लाल बहादुर शास्त्री का ताशकंद में ही निधन हो गया। वे मात्र 18 माह ही प्रधानमंत्री रहे, परंतु लोगों के दिल में अब तक बसे हुए हैं।

देवो दानात् वा दीपनात् वा द्योतनात् वा द्यु स्थाने अवतीती।

देव देने वाले को, प्रकाशमान, चमकाने वाले कोचमकाने व प्रकाशित करने वाले को तथा जो द्यो लोक में स्थित है जैसे सूर्य, चन्द्र व अन्य तारागण ये सभी देव कहलाते हैं। सबसे बड़ा दानी, प्रकाशमान, प्रकाशित करने वाला वही परमात्मा है जिससे ये सभी प्रकाश प्राप्त करते हैं। अत: वह देव है और वही देवी है।

दुर्गाणि तरति सा दुर्गा। जो धार्मिक व्यक्तियों के दुर्गुणों को समाप्त करके उन्हें सभी प्रकार के दुर्गों (कठिनाइयों) से पार करा देता है। इसलिए उस प्रभु को दुर्गा कहते हैं।

दुर्गा को महिषासुर दामिनी, प्राय: चित्रों में अंकित किया जाता है। मनुष्य का मन ही महिषासुर बन जाता है। जब ईर्ष्या, राग-द्वेष और निन्दा में प्रवृत्त हो जाता है। इनके ऊपर ब्रह्म विद्या के द्वारा ज्ञान-विज्ञान के द्वारा नियंत्रण करना ही महिषासुर का दमन है। ब्रह्म विद्या ही दुर्गा है।

प्राणों को ही जब ये हिंसक, दुष्ट प्रवृत्ति को अपनाते हैं तो सिंह की उपमा दी है। पति-पत्नी परस्पर प्राणेश्वर व प्राणप्रिय का सम्बोधन करते हैं। उस परमात्मा को गायत्री महामंत्री में भू: प्राण स्वरूप कहा गया है। स्वामी रामदेव ने प्राणायाम द्वारा इस प्राण को काम वासना हटाकर शुभ संकल्प में लगाने का वर्तमान में सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया। इस शरीर में जब आत्मा इनके ऊपर सवार होकर इनको धर्म के मार्ग पर चलाता है तो शेर की सवारी दुर्गा बन जाती है।

देवी पूजा और वेद

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।

अथर्ववेद 90/2/39

यह देवताओं की नगरी (दुर्ग) शरीर कठिनता से जीतने योग्य है, जिसमें आठ चक्र और नौ द्वार हैं।

अत: दुर्गा माता की पूजा मनुष्य कब कर सकता है जिस काल में उसके द्वारा ज्ञान होता है, विद्या का सिंहनाद होता है। सिंहनाद कौन सा? जिससे अपराधियों को कुचला जाता है, अज्ञान रूपी शत्रुओं को शांत किया जाता है।

यह अष्ट भुजों वाली दुर्गा है, इसकी अष्ट भुजा क्या हैं। यह ब्रह्माण्ड जिसमें आठ दिशा हैं। इनका ज्ञान-विज्ञान वही इसकी आठ भुजाएं हैं। महर्षि पतंजलि के योग के अष्टांग भी दुर्गा की आठ भुजाएं हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी रामतीर्थ व विवेकानंद आदि ने इसे धारण कर समाज की बुराइयों के खिलाफ सिंहनाद कर देश-विदेश में भारत का नाम रोशन किया।

अत: शारदीय नवरात्रों में उपरोक्त नियमों का पालन कर व्यक्ति शीतकाल में शक्ति संचय कर सकता है। जो ग्रीष्म ऋतु से वर्षा ऋतु तक क्षय हो जाती है। नवरात्रि के आठ दिन प्रत्येक अंग के बारे में विद्वान ब्राह्मण द्वारा उपदेश सुने। नवें दिन आत्मा परमात्मा व प्रकृति का ज्ञान प्राप्त करें। नौदिन तक काम वासना का चिंतन से मुक्त कर सीमित सात्विक अन्न व फलाहार का प्रयोग करें। प्रात:काल सूर्योदय के पश्चात् और सायंकाल सूर्यास्त से पूर्व स्नानादि से निवृत्त होकर सुगंधित पदार्थ, मेवा, मिष्ठान, रोग नाशक औषधियां/वनस्पति युक्त हवन सामग्री व गोघृत/शुद्ध घी से यज्ञ करें। माँ जगदम्बा रूपी परमात्मा आपको पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक सुख सम्पदा से सम्पन्न करेगा।

स्वास्थ्य के लिए गुणकारी सेब

अंग्रेजी में कहा गया है, ''एन एपल ए डे, कीप्स द डॉक्टर अवे'' अर्थात् एक सेब रोज खाओ और डॉक्टर को दूर भगाओ। सेब पौष्टिक तथ्वों से भरा है।

एनीमिया भगाएँ- ये एनेमिया जैसी बीमारी का इलाज भी करता है क्योंकि सेब में आयरन बहत अच्छी मात्रा में पाया जाता है। अगर आप दिन में 2 से 3 सेब खाते हैं तो यह पूरे दिन की आयरन की कमी को पूरा करता है।

मधुमेह से बचाएँ- सेब में पाए जाने वाला पेक्टिन जो की ग्लाक्ट्रोनिक एसिड की कमी शरीर में पूरी करता है और इंसुलिन के उपयोग को कम करता है।

कैंसर के खतरे को कम करे- सेब में मौजूद क्वरसिटिन व्यक्ति की कोशिकाओं को नुकसान पहुँचने से बचाता है। इससे कैंसर का खतरा कम हो जाता है।

लीवर को मजबूत करे- हम अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में थोड़ा-बहुत जहरीला खाना खाते हैं, जिसे हमारा लीवर शरीर से साफ करता है। लीवर को मजबूत रखने के लिए रोज एक सेब खाए क्योंकि इसमें एंटीओक्सिडेंट पाए जाते हैं।

कर्मयोगी श्री मदनसिंह आर्य की 33वीं पुण्यतिथि 8 अक्टूबर पर विशेष

युवा हृदय सम्राट, क्रांतिकारी, सामाजिक क्रांति का प्रेरक

महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैचारिक क्रांति का योद्धा, आर्य समाज और आर्य वीर दल का सिपाही, महान् देशभक्त, सामाजिक क्रांति का उद्‌बोधक, युवकों के हृदय में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के मजबूत इरादों का बीजारोपण करने वाला कर्मयोगी श्री मदनसिंह आर्य अपने अल्प जीवनकाल में इतना वृहद कार्य करके चले गये कि युगों-युगों तक उनका नाम इतिहास के पन्नों में याद किया जाता रहेगा और आने वाली युवा पीढ़ियां उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा पाकर देश के लिए समर्पित होने के लिए संकल्पबद्ध होती रहेगी।

उनका जन्म 25 अक्टूबर, 1931 को जोधपुर में ही हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा जोधपुर शहर में ही श्री उम्मेद हाई स्कूल में हुई। स्कूली शिक्षा के साथ-साथ उनके जीवन पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ता चला गया। देशभक्त क्रांतिकारियों के साथ रह कर वे भी 1947 को आजादी के असली हकदार बन गये। आर्य समाजों के कार्यक्रमों और आर्यवीर दल के शिविरों में सक्रिय भाग लेते थे। गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिये उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से राजस्थान प्रान्त में जोधपुर, जयपुर, अजमेर, ब्यावर, पाली, पीपाड़ आदि अनेकानेक स्थानों पर क्रांति एवं बगावत की ज्योति प्रज्वलित की।

20 अप्रैल 1951 में भारतीय सेना में चले गये उन्होंने गोवा मूवमेन्ट की अग्रिम पंक्ति में भाग लिया। अपनी बटालियन के द्वारा उन्होंने फ्रांसिसियों को गोवा के किले के अन्दर सुरा-सुन्दरियों के साथ नग्न अवस्था में रंगरेलियां मनाते गिरफ्तार कर बंदी बनाया।

1962 में भारत-चीन युद्ध, 1965 में भारत-पाक लड़ाई और 1971 में फिर भारत-पाक युद्ध में सच्चे भारतीय सैनिक के रूप में भाग लिया। परिणामस्वरूप उन्हें अपनी योग्यता के आधार पर पदोन्नत कर रिसालदार बनाया गया। उन्होंने हाइवेस्ट मिलिट्री एज्यूकेशन सर्टिफिकेट हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किये। उनको पाकिस्तान की 1965 के लड़ाई में भारतीय सेना में रक्षा मेडल एवं समर सेवा स्टार से सम्मानित किया। उनकी इन उपलब्धियों से पता चलता है कि श्री मदनसिंह आर्य शारीरिक एवं मानसिक रूप से पूर्ण परिपक्व थे। 25 मई, 1972 में उन्होंने सेना से डिस्चार्ज ले लिया। इस समय में आर्मड कौर में रिसालदार मेजर थे।

परिश्रम एवं योग्यता के आधार पर मदनसिंह आर्य सेना में जल्दी ही जूनियर कमीशन ऑफिसर बन गए। उन्हें खेलकूद का बहुत शौक था। सर्विसेज बॉक्सिंग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

जब-जब सेना से छुट्टियों पर आते वे अपना संपूर्ण समय आर्य वीर दल के माध्यम से पूरे राजस्थान प्रांत में दौरे करते और युवकों के चरित्र निर्माण, योगाभ्यास, जिम्नास्टिक, बॉक्सिंग, मलखंभ, सैनिक शिक्षा, प्राथमिक चिकित्सा आदि की शिक्षा का प्रचार व प्रसार करते।

श्री मदनसिंह आर्य के पास चरित्र रूपी महान खजाना था जिन महान कार्यों के लिये उनका जन्म हुआ वास्तव में राष्ट्र को उनके कार्यों की आवश्यकता थी। उनका संपूर्ण जीवन नौजवानों को संगठित कर अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना से देश की एकता और अखण्डता की सुरक्षा के लिये साम्प्रदायिक सद्‌भावना बनाने के लिये लगा रखा। उनका कहना था कि सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विषमता को दूर करने के लिये सबसे पहले नौजवानों को क्रांतिकारी कदम उठाना चाहिये, ताकि हमारे राष्ट्र का चरित्र निर्माण हो सके। उनका सारा जीवन सादा और उच्च विचारों व कर्म से ओत-प्रोत एवं संघर्ष-साधना का प्रतिरूप रहा।

मदनसिंह आर्य सौम्य विद्रोही थे, उनका जीवन कर्मठता, साधना और संभावनाओं से भरपूर था। उन्होंने 40 वर्ष तक राष्ट्र व समाज की एक समाज सुधारक की भांति निस्वार्थ भावना से सेवा की। वे महर्षि दयानंद के वैचारिक आंदोलन के भागीदार आर्य समाजी थे। युवकों में अपनी कार्य पद्धति, तर्क शक्ति और वैज्ञानिक व्याख्या से अमिट छाप छोड़ते थे।

कर्मयोगी मदन सिंह आर्य

वे जहां भी जाते मूर्ति पूजा, सतीप्रथा, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, अंधविश्वास, पाखण्ड, छुआछुत, जातिवाद और धार्मिक अंधता का स्पष्ट एवं कठोर शब्दों में तीव्र आलोचना करते एवं खुले शास्त्रार्थ की चुनौती देते। उन्होंने कहा कि कुप्रथाएं हमारे राष्ट्र की नैतिकता को विश्व भर में कलंकित करती है। अत: युवकों को संगठित होकर इन जड़वादी नीतियों के विरुद्ध एवं अज्ञान, अन्याय और अभाव के खिलाफ आंदोलन करना चाहिये ताकि एक विशुद्ध नये समाज की संरचना हो सके। मदनसिंह प्रथम समाज में श्रेष्ठ व्यक्ति का निर्माण और द्वितीय समाज को जागृत करना चाहते थे।

सर्वप्रथम 1972 में राजस्थान में प्रांतीय जिम्नास्टिक संघ की स्थापना स्वयं के कर कमलों द्वारा और प्रांत के संघ के सचिव पद को भी सुशोभित किया। तत्पश्चात् लंबे संघर्ष से प्रांतीय स्तर का 1984-95 में मुक्केबाजी (बॉक्सिंग) संघ की नींव भी आप द्वारा लगायी गयी।

आपके द्वारा प्रशिक्षित कई युवकों ने राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक प्राप्त किये। कई वर्षों तक राजस्थान के आर्य वीर दल के अधिष्ठाता पद पर कार्य करके राष्ट्रीय स्तर के आर्य वीर दल शिविरों में बौद्धिक एवं शारीरिक प्रशिक्षण दिया। वे आर्य समाज के कई वर्षों तक मंत्री रहे। महर्षि दयानंद स्मृति भवन जिसमें महर्षि को जहर दिया गया था एवं जो 1973 में राज्य सरकार द्वारा आर्य समाज को प्राप्त हुआ उस भवन को मदनसिंह आर्य ने आर्य युवकों का प्रेरणा स्थल बनाया।

मदनसिंह आर्य अपने अलप जीवन काल में पूरे आत्मविश्वास एवं आत्मगौरव की ज्योति हजारों युवकों में जलाकर चले गये। उनकी ओजस्वी भाषा, बौद्धिक व्याख्यान व तर्कसंगत वैज्ञानिक विचार पद्धति ने विशेषकर नवयुवकों को आकृष्ट किया। वे जहां भी जाते, उठते-बैठते नौजवानों का काफिला उनके साथ लगा रहता।

मदनसिंह आर्य का जीवन सफल जीवन था, क्योंकि उनका जीवन मानव कल्याण व मुख्य रूप से नौजवानों के उत्थान में लगा रहा। इस भौतिक जगत में वे देव ऋण से मुक्त हो गये। इससे महान् मूल्य किसी इंसान के जीवन का और हो भी क्या सकता है?

महर्षि दयानंद से प्रेरणा लेकर मदनसिंह आर्य याने हमारे प्रिय 'मदन भाईसा' ने आर्यवीर दल नामक संगठन के माध्यम से एक क्रांति का सूत्रपात किया था। उनके पुरुषार्थ से आर्य समाज में नई चेतना आई। आर्य समाज की यज्ञाग्नि को ठंडा करने वाले षडयंत्रकारियों से संगठन को मुक्ति मिली तथा आर्य समाज में नये रक्त का संचार हुआ परिणामत: समाज के तीन शत्रु अज्ञान, अन्याय एवं अभाव के विरुद्ध संघर्ष का जोरदार सूत्रपात हुआ।

भारतीय दर्शन के अनुसार मदनसिंह आर्य अपने पूर्वजन्म के संस्कार व तत्कालीन जीवन के पुनीत कर्मों से एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के पुरुष थे। उस पुण्यात्मा ने हजारों-हजारों युवकों को पुण्य कमाकर दियें। अपने जीवन की आखिरी यात्रा में वे नागरिक सुरक्षा (सिविल डिफेंस) में सी.डी.आई. के पद पर जोधपुर में कार्यरत रहे। उन्हीं दिनों में माउंट आबे पर एन.सी.सी. के कैडेट्स को सुरक्षा के मर्म को बताते हुये अपने पंच भौतिक तत्वों से बने शरीर को 8 अक्टूबर 1985 को सांय 6.45 बजे छोड़ दिया।

आर्य जगत का महान् पुरुष, आचार्य, महर्षि दयानंद का अनन्य भक्त भारत माता के सपूत को ईश्वर ने हमारे बीच से हमेशा के लिये उठा लिया। हजारों आर्य वीर युवकों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ-साथ उनके कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेंगे, ताकि आने वाली पीढ़ी को वे भी एक प्रेरणा के स्त्रोत बन सकें।

उनका उद्‌बोधन- 'आर्य वीर दल' स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्य-संस्कृति के आधार पर युवकों में चरित्र-निर्माण करता है उनमें राष्ट्रीय, विश्व-बंधुत्व एवं कृण्वंतों विश्वमार्यम् का संचार करता है। मनुष्यों में मानवीय गुणों को पल्लवित करता है। समय-प्रवाह के साथ-साथ समाज में उत्पन्न अंधविश्वास, रुढ़िवादिता, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, दास-प्रथा, अस्पृश्यता, नारी-उत्पीड़न जैसी कुरीतियों को नेस्तनाबूद कर समाज में पुन: वैदिक धर्म, संस्कृति, सभ्यता एवं कल्याणकारी परम्पराओं का निर्वाह कराना 'आर्य वीर दल' का प्रमुख लक्ष्य है। इस कार्य हेतु शारीरिक, नैतिक एवं बौद्धिक विकास के पथ-प्रशस्त करता है। महर्षि दयानंद के सपनों को साकार करने एवं सौम्य समाज की रचना के लिये संघर्षरत रहा है। अत: अधिक से अधिक संख्या में 'आर्य वीर दल' की विचारधारा से जुड़ना चाहिये। -**स्व. मदनसिंह आर्य**

- ***नारायण सिंह आर्य***
पूर्व उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

नारी सशक्तीकरण - बनाम अशक्तीकरण

-: आकांक्षा यादव :-

राजनीति और प्रशासन दो ऐसे क्षेत्र हैं जो न सिर्फ नीति निर्माण करते हैं बल्कि उनका कार्यान्वयन भी सुनिश्चित करते हैं। यह पहली बार हुआ है जब भारतीय राजनीति में महिलाएं शीर्ष पर स्थान बनाने में कामयाब हुई हैं। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल (पूर्व), लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार, यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण के साथ-साथ राजधानी दिल्ली में शीला दीक्षित, उत्तर प्रदेश में मायावती, पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी, तमिलनाडु में जयललिता, बिहार में राबड़ी देवी, राजस्थान में वसुंधरा राजे इत्यादि महिलाएं मुख्यमंत्री पर पर आसीन हैं या हो चुकी हैं। प्रशासनिक स्तर पर भी देखें तो महिलाएं अहम पदों पर पदस्थ हैं। आई.ए.एस. की परीक्षा में जहाँ महिलाओं ने शीर्ष स्थान हासिल किए हैं, वहीं सीबीएसई द्वारा घोषित 10वीं व 12वीं के नतीजों में प्राय: हर साल लड़कियाँ ही बाजी मारती हैं। भारत में हर साल 1.25 महिलाएं डॉक्टर की डिग्री प्राप्त करती हैं जो कि कुल उत्तीर्ण छात्रों का पचास प्रतिशत है। भारत की 6.38 लाख पंचायतों में से 77210 की अध्यक्षता महिलाएं कर रही हैं। एक लम्बे समय बाद ही देश के सर्वोच्च न्यायालय में भी महिलाओं की भागीदारी दिख रही है। कॉरपोरेट जगत में भी तमाम महिलाएं शीर्ष पदों पर हैं।

उपरोक्त स्थिति देखकर किसी को भी भ्रम हो सकता है कि भारत में नारी सशक्तीकरण चरम पर है और महिलाएँ न सिर्फ घर चला सकती हैं बल्कि देश भी चला रही हैं। पर क्या वाकई ऐसा है या यह उपस्थिति प्रतिकात्मक मात्र है।

राजनीतिक स्तर पर ऊपरी तौर पर भले ही महिला प्रतिनिधित्व एक गुलाबी तस्वीर पेश करता है पर असलियत यह है कि भारत में लोकसभा में महिलाओं को सिर्फ 11 फीसदी और राज्यसभा में 10.7 फीसदी प्रतिनिधित्व है। अंतर्राष्ट्रीय समूह इण्टर पार्लियामेंटरी यूनियन आई.पी.यू. जनवरी, 2014 में जारी किए गये आंकड़ों के अनुसार भारत का राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के मामले में 98वाँ स्थान है। यहाँ आखिर यूं ही 33 फीसदी आरक्षण की माँग नही हो रही है। समाज के दलित-पिछड़े वर्ग से आने वाली महिला प्रतिनिधियों के साथ कैसा व्यवहार होता है, किसी से नहीं छुपा है। बिहार में मुसहर जाति की एक सांसद को टी.टी. ने ट्रेन के वातानुकूलित कोच से परिचय देने के बावजूद इसलिए बाहर निकाल दिया क्योंकि वह वेषभूषा से वातानुकूलित कोच में बैठने लायक नहीं लगती थी।

भारत में महिलाओं की स्थिति क्या है, इस संबंध में जनगणना 2011 के आंकड़े साबित करते हैं। कि आज भी लिंगानुपात 940 है अर्थात् 1000 पुरुषों पर मात्र 940 महिलाएँ। आखिर हम इस तथ्य की अवहेलना क्यों करते हैं कि नारी के अस्तित्व पर ही सृष्टि का अस्तित्व टिका हुआ है। अकेले पुरुष से दुनिया को नहीं चलाया जा सकता। यही कारण है कि लिंगानुपात में बढ़ते फासले का असर देश के कुछ इलाको में दिख भी रहा है, जहाँ लड़कों को शादी में परेशानी आ रही है। यह उसी पुरुष मानसिकता का हश्र है, जिस पर हम गर्व करते रहे हैं। कन्या जन्म के नाम पर परिवार में मातम अभी भी आम बात है। लड़कियों को गर्भ में ही या पैदा होते ही मार देने की घटनाएं बढ़ी हैं। 6 साल तक की आबादी में इस समय 1000 लड़कों के मुकाबले 914 लड़कियां ही हैं, जो कि 2001 में 929 थीं। आज भी हरियाणा और पंजाब जैसे राज्य में यह स्थिति भयावह है। भारत में साल भर में 290000 बेटियां कोख में ही मार दी जाती हैं और इसके लिए बाकायदा लगभग 450 करोड़ रुपये का भ्रूण हत्या का कारोबार चल रहा है।

एक नए अध्ययन में यह बात सामने आई है कि संतान के रूप में एक लड़की होने के बाद यदि गर्भ में दूसरी भी लड़की आ जाती है तो ऐसे भ्रूण की हत्या करवाने की प्रवृत्ति भारत में तेजी से बढ़ रही है। प्रतिष्ठित लैसेट पत्रिका में प्रकाशित होने वाले इस अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार 1980 से 2010 के बीच इस तरह के गर्भपातों की संख्या 42 लाख से एक करोड़ 21 लाख के बीच है। सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि यह कृत्य उन परिवारों में अधिक देखा गया, जिन्हें सुशिक्षित एवं समृद्ध माना जाता है। गरीब व अशिक्षित व्यक्ति तो बच्चों को ईश्वरीय नियति मानकर शांत रह जाता है पर तथाकथित सुशिक्षित सम्पन्न एवं संभ्रान्त लोग अवैध होने के बावजूद पैसों के दम पर न सिर्फ प्रसव पूर्व लिंग जांच करा रहे हैं, बल्कि कन्या भ्रूण होने पर उसे गर्भ में ही खत्म कर देने से गुरेज भी नहीं करते हैं। ऐसी प्रवृत्ति आमतौर पर पहली संतान के लड़की होने के मामलों में देखी जाती है। 1980 के दशक में कन्या भ्रूण का चुनिन्दा गर्भपात 0.20 लाख था जो 1990 के दशक में बढ़कर 12 लाख से 40 लाख तथा 2000 के दशक में 31 लाख से 60 लाख तक हो गया। यदि कोई महिला इसका विरोध भी करना चाहे तो उसे तवज्जो नहीं मिलती। वैसे भी धर्म और संस्कृति के सहारे पितृसत्ता स्त्री के एक स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व होने की संभावनाओं को नष्ट कर रही है। हिन्दू समाज में उसी स्त्री को आदर्श माना गया जो मनसा-वाचा-कर्मणा पति की अनुगामिनी रही है। भारत ही नहीं अमेरिका में भी भारतीय मूल की महिलाएं पुत्र की चाह में खूब कन्या भ्रूण हत्या करवा रही हैं। खास बात यह है कि भारत के विपरीत अमेरिका में लिंग निर्धारण करवाना कानूनन वैध हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया द्वारा सितम्बर 2004 से दिसम्बर 2009 के बीच लिंग निर्धारण परीक्षण करवाने वाली प्रवासी भारतीय महिलाओं पर हुए शोध में यह बात सामने आई कि 40 प्रतिशत महिलाओं ने यह मानने के बाद कि उनके गर्भ में कन्या पल रही है, गर्भपात करवा दिया।

एक तरफ प्रधानमंत्री कन्या भ्रण हत्या को राष्ट्रीय शर्म बताते हैं, वहीं कन्या, भ्रूण से लेकर अंतिम समय तक पिस रही है। यदि कन्या भ्रूण ने ही जन्म ले भी लिया तो उनके सम्मान में होता खिलवाड़, दहेज उत्पीड़न, बलात्कार की दर्जनों घटनाएँ अपनी नाक की खातिर माँ-बहन-बेटी की हत्या और बूढ़ी माँ को दर-दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ देना आम बात हो गई है। आज भी किसी अपराध से सबसे आसान मोहरा महिलाएँ ही होती हैं। उनके साथ दुर्व्यवहार, दुष्कर्म व छेड़छाड़ आम बात है। आंकड़े बताते हैं कि पेशेवर अपराधियों से भी ज्यादा गली-मुहल्ले, पड़ोस में कुंठित युवक व अधेड़, स्त्री सम्बन्धी अपराधों के सूत्रधार हैं। घरेलू हिंसा व कार्यसीलों पर यौन उत्पीड़न के संदर्भ में इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वूमेन,अमेरिका और इंस्टीट्यूट प्रोमुंडीन, ब्राजील द्वारा संयुक्त रूप से किया गया अध्ययन बताता है कि अपनी जिन्दगी में कभी न कभी 24 फीसदी भारतीय पुरुष यौन हिंसा को अंजाम देते हैं, सिर्फ 17 फीसदी भारतीय पुरुष ऐसे कहे जा सके हैं कि जो समानता मूलक सम्बन्धों के हिमायती हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक भारत में प्रति 51वें मिनट पर एक बलात्कार और हर 1202वें मिनट में एक दहेज हत्या होती हैं। देश में बलात्कार के मामले 2005 में 18349 के मुकाबले बढ़कर 2009 में 22000 हो गए। महिलाओं के उत्पीड़न के मामले भी इस अवधि में 34000 से बढ़कर 39000 हो गए जबकि दहेज हत्याओं के मामले 2005 में 6000 के मुकाबले 2009 में 9000 हो गए। यही नहीं विश्व की सर्वाधिक बाल वेश्यावृत्ति भी भारत में है, जहाँ 4 लाख से अधिकतर लड़कियाँ हैं।

कहते हैं कि सामाजिक व आर्थिक विकास में शिक्षा की अहम भूमिका है, पर यहाँ तो शिक्षित परिवार अभी भी रूढ़ियों से ग्रस्त नजर आता है। आज हर क्षेत्र में महिलाएँ पुरुषों से कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं और घर के साथ-साथ बाहरी दुनिया से भी तालमेल बनाए हुए हैं। इसके बावजूद बेटियों को पराया समझना, शादी के लिए बोझ समझना, वंशवृद्धि से लेकर चिता में अग्नि देने जैसी तमाम परम्पराओं का वाहक मात्र बेटों को समझना आम बात है। अभी भी नारी-शिक्षा परिवार की प्राथमिकताओं में शामिल नहीं है, तभी तो देश की छियासी प्रतिशत बेटियां प्राथमिक स्तर पर ही स्कूल (पढ़ाई) छोड़ देती हैं और चौसठ फीसदी लड़कियाँ विवाह के लिए निर्धारित 18 वर्ष की आयु पूरी करने से पहले ही ब्याह दी जाती हैं और इनमें से 22 फीसदी तो इस अपरिपक्व उम्र में ही माँ भी बन जाती हैं। मध्यप्रदेश में 73 फीसदी लड़कियाँ 18 साल से पहले ब्याह दी जाती हैं, जबकि आंध्रप्रदेश में यह आंकड़ा 71 फीसदी, राजस्थान में 68 फीसदी, बिहार में 67 फीसदी और उत्तर प्रदेश में 64 फीसदी है। दिन भर सबका ख्याल रखने वाली नारी के स्वास्थ्य का शायद कोई भी ख्याल नहीं रखना चाहता। तभी तो हमारे देश में 15 से 19 साल की उम्र वाली 47 फीसदी लड़कियाँ औसत से कम वजन की हैं। आज भी 56 फीसदी लड़कियाँ एनीमिया यानि खून की कमी की शिकार हैं। प्रति वर्ष 6 हजार महिलाएँ बच्चे को जन्म देने के साथ ही मौत के आगोश में चली जाती हैं। देश में हर साल टीबी के कारण एक लाख से ज्यादा महिलाएँ परिवार से अलग कर दी जाती हैं। सामाजिक तौर पर कई इलाकों में आज भी महिलाओं को डायन और चुड़ैल बताकर पत्थरों से मार डाला जाता है, जिन्दा जलाकर सती के नाम पर महिमा मंडित किया जाता है। आम बोलचाल की भाषा में बात-बात पर महिलाओं के अंगों को लानत मलानत लोगों के रोजमर्रा के व्यवहार का हिस्सा है। ऐसे में भला नारी सशक्तीकरण, असशक्तीकरण में क्यों न बदल जाए?

21वीं सदी में जबकि नारी के प्रति विभेद की दीवारें टूटनी चाहिए, शिक्षित समाज द्वारा इस प्रकार का विभेद स्वयं उनकी मानसिकता को कटघरे में खड़ा करता है। आर्थिक आंकड़े बता रहे हैं कि भारत 8-9 प्रतिशत विकास दर के साथ समृद्धि और सम्पन्नता की ओर अग्रसर है, पर क्या इस सम्पन्नता में महिलाओं का योगदान शून्य है? हम प्राय: भूल जाते हैं कि जिन बीजों के सहारे सृष्टि का विकास क्रम अनवरत चलता रहता है यदि उस बीज को प्रस्फुटित ही न होने दें तो सारी सृष्टि ही खतरे में पड़ जायेगी। यह समय है मंथन करने का, विचार करने की कि सृष्टि का अस्तित्व सह-अस्तित्व पर टिका है न कि किसी एक के अस्तित्व पर।

वैदुष्य एवं विनम्रता के मूर्तिमान विग्रह तथा लेखनी के महाधन
डॉ. भवानीलाल भारतीय : विनम्र श्रद्धांजलि

आर्य समाज और ऋषि दयानन्द से संबंधित सभी आवश्यक तथ्यों की जानकारी के स्रोत, वैदुष्य एवं विनम्रता के मूर्तिमान् विग्रह, पं. लेखराम के उत्तराधिकारी और लेखनी के महाधन प्रो. भवानीलाल भारतीय अपनी जीवन यात्रा (6 जून, 1928 - 11 सितम्बर, 2018) पूरी कर परलोक के लिए प्रस्थान कर गये। 175 पुस्तकों तथा लगभग 1500 लेखों के रचनाकार वरेण्य भारतीय जी की उल्लेखनीय कृतियाँ तथा पावन स्मृतियाँ ही अब शेष रह गई हैं। ऋषि दयानन्द के जीवन चरित से सम्बद्ध ऐतिहासिक घटनाओं और तथ्यों के साथ-साथ सभी उपादान सामग्रियों के संकलन के लिए आजीवन परिश्रमी प्रो. भारतीय का एकमात्र व्यसन पढ़ना और लिखना था। दयानन्द की जीवनी और रचनाओं के विषय में जितना भी आज तक लिखा गया है उन सबको संकलित, प्रकाशित और सुचर्चित करते रहना यही उनकी खासियत थी। आर्य समाज के सिद्धांत और इतिहास को शोधपूर्ण रीति से पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर प्रस्तुत करने में उनकी सर्वाधिक रुचि थी। प्रमाद, विश्राम और थकावट उन्हें छू तक नहीं पाई थी। उनके लिए ऋषि दयानंद और आर्य समाज की सब कुछ (सर्वस्व) था। उनके लेखनका क्षितिज बहुत व्यापक है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, आर्य सिद्धांत, संस्कृत साहित्य, हिन्दी साहित्य, संस्मरण, जीवनी, आलोचना, सम्पादन और अनुवाद से लेकर आज तक के सभी आर्य लेखकों और विद्वानों के लेखकीय साहित्य का भी संग्रह और समीक्षण करना उनके ही बूते की बात थी।

विगत सात दशकों (70 वर्ष) तक फैला हुआ उनका लेखकीय व्यक्तित्व और कृतित्व किसी भी सुलेखक के लिए स्पृहा का विषय हो सकता है। देशी या विदेशी किसी भी लेखक के द्वारा स्वामी दयानन्द और आर्य समाज कि की गई आलोचना उन्हें सहन नहीं होती थी और उसका तत्काल उत्तर लिखकर वे आर्य पत्रों में प्रकाशित करते थे। पं. गुरुदत्त, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय से लेकर पं. भगवद्दत, गंगा प्रसाद उपाध्याय, धर्मदेव विद्यामार्त्तण्ड, युधिष्ठिर मीमांसक और स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती प्रभृत्ति सैकड़ों आर्य विद्वानों की कृतियों से पाठकों को परिचित कराने में उनको व्यक्तिगत प्रसन्नता और गौरव की अनुभूति होती थी। आज से 50 वर्ष पूर्व 1968 ई. में उनकी पी.एच.डी. थीसीस 'ऋषि दयानंद और आर्य समाज की संस्कृत साहित्य को देन' पं. युधिष्ठिर मीमांसक की देख-रेख में छपी थी। तब से आज तक ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से सम्बद्ध किसी का भी शोध प्रबन्ध डॉ. भारतीय या उनकी पुस्तकों की सहायता लिए बिना नहीं लिखा जा सकता है। ऑस्ट्रेलिया के प्रो. जार्डन्स और अमेरिकी प्रो. लेविलिन से लेकर डॉ. प्रीाा शास्त्री के शोध प्रबन्ध 'स्वामी दयानंद के हिन्दी लेखन का साहित्यिक, भाषिक और शैलीगत अध्ययन' जैसे अधुनातन अनुसंधान- ग्रंथ इसके प्रमाण हैं। सैकड़ों शोधार्थियों ने उनकी पुस्तकों से सामग्री संकलन की है और भावी शोधकर्मी भी डॉ. भारतीय और उनकी रचनाओं के अधमर्ण रहेंगे। संक्षेपत: ऋषि दयानंद और आर्य समाज के इतिहास, ग्रंथ, सिद्धांत और विचारों के वे 'इनसाइक्लोपीडिया' (विश्वकोष) थे। लेखनी के धनी मसिजीवी डॉ. भारतीय की 175 पुस्तकों की रचना की।

डॉ. भारतीय ने अपनी प्रतिनिधि रचना 'नवजागरण के पुरोधा : महर्षि दयानंद सरस्वती' (द्वितीय संस्करण, 2008 ई.) के उपसंहार में लिखा है:-

मेरी चेष्टा थी कि मेरा पुस्तक संग्रह स्वामी दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज विषयक ग्रन्थों, पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य प्रकार के दस्तावेजों का अद्वितीय संग्रह हो। मैं इस कार्य में सफल हुआ। मेरे पुस्तकालय में एतद् विषयक लगभग पांच हजार ग्रन्थ तथा पत्र-पत्रिकाओं की पांच सौ दुर्लभ फाइलें थीं।

सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न बाईस भाषाओं में अनुवाद, उनके अन्य ग्रन्थों के विभिन्न संस्करण, टीका, व्याख्या आदि ग्रन्थों के अतिरिक्त स्वामी जी के जीवन चरित्र बहुसंख्या (शताधिक) में थे। अब यह दुर्लभ ग्रन्थ संग्रह दण्डी विरजानन्द के स्मारक रूप में कुरुक्षेत्र में बनाये जाने वाले एक शेध ग्रन्थालय को दे दिया गया है। तथापि प्रकाशित अप्रकाशित पूरा वृत्त, दस्तावेज तथा पत्रों की कतरनें लगभग बीस वेष्टनों (बस्तों) में मेरे पास हैं, जिनका उपयोग स्वामी दयानन्द के अध्ययन तथा तद्विषयक लेखन के लिए भावी शोधकर्ताओं एवं लेखकों द्वारा किया जा सकता है।

डॉ. भारतीय जैसे मनीषी लेखकों के लिए ही संस्कृत की यह सूक्ति चरितार्थ होती है- **'कीर्त्तिरक्षरसंयुक्ता चिरं निष्ठति भूतले'**।

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, साहित्यकार, समाजसेवी सुन्दरलाल कथूरिया जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का किया गया आयोजन
अनेक गणमान्य महानुभावों ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान, उच्चकोटिस के लेखक, साहित्यकार, मनीषी एवं समाजसेवी डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया जी का 14 सितम्बर, 2018 को अकस्मात देहावसान हो गया। दिनांक 18 सितम्बर, 2018 को आर्य समाज जनकपुरी ब्लॉक-बी-1, नई दिल्ली में उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक सभा की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डॉ. कथूरिया के निधन को आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति बताया। उन्होंने कहा कि डॉ. सन्दर लाल कथूरिया आर्य समाज के गौरव थे तथा वैदिक सिद्धांतों के उच्च कोटि के मर्मज्ञ विद्वान थे। साहित्य जगत में उनकी विशेष प्रतिष्ठा थी और उसी के कारण हाल ही में उत्तरप्रदेश हिन्दी अकादमी ने उन्हें उनके पुस्तक लेखन एवं साहित्य सेवा के लिए दो लाख रुपये से पुरस्कृत करने की घोषणा की थी। स्वामी जी ने बताया कि डॉ. कथूरिया जी को पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित करने हेतु सार्वदेशिक सभा ने भारत सरकार को विशेष आवेदन किया था किंतु ईश्वर की व्यवस्था निश्चित है, उसमें कहीं कुछ परिवर्तन नहीं हो सकता और वे अपने इन प्राप्त होने वाले सम्मान से पहले ही सदा के लिए विदा हो गये। स्वामी जी ने कहा कि डॉ. कथूरिया जी एक स्पष्टवादी नेता तथा लोकप्रिय विद्वान थे।

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि ने गहरा दु:ख व्यक्त करते हुए कहा कि 13 सितम्बर, 2018 को वे उनसे मिलने उनके घर आये थे और कई विषयों पर उन्होंने मुझसे चर्चा की थी किन्तु अगले ही दिन 14 सितम्बर, 2018 को वे अचानक कूच कर गये। यह मेरे लिए गहरा आघात है। उन्होंने कहा कि डॉ. कथूरिया जैसे प्रखर लेखक, साहित्यकार, स्पष्टवादी वक्ता, अथक परिश्रमी तथा आर्य विचारों से ओत-प्रोत व्यक्ति बहुत कम देखने को मिलते हैं। मैं अपने श्रद्धा पुष्प प्रस्तुत करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

श्री अनिल आर्य ने डॉ. कथूरिया को महर्षि दयानंद की विचारधारा को अपनी लेखनी से प्रचारित-प्रसारित करने वाला एक अप्रतिम विद्वान बताया। उन्होंने कहाकि वे सदैव केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यों में अपना आशीर्वाद एवं सहयोग प्रदान करते थे।

श्री विनय आर्य ने डॉ. कथूरिया के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि डॉ. कथूरिया जी का स्नेह उन्हें सदैव प्राप्त रहा और वे समय-समय पर अपना मार्गदर्शन एवं प्रेरणा हमें देते रहते थे। पूर्व महापौर श्री पृथ्वीराज साहनी जी ने कहा कि डॉ. कथूरिया जी हमारे अग्रज थे और उनका हमेशा वरदहस्त हमारे सिर पर बना रहता था। उनके जाने से नि:संदेह समाज का एक मजबूत स्तम्भ गिर गया है।

श्रद्धांजलि सभा का संयोजन करते हुए प्रसिद्ध वैदिक विद्वान 'अध्यात्म पथ' पत्रिका के सम्पादक देश-विदेश में विख्यात आचार्य चन्द्रशेखर जी ने कथूरिया जी के जीवन पर अनेक संस्मरण सुनाते हुए प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कथूरिया जी एक अद्भुत प्रतिभा के धनी विद्वान थे और उनके दिमाग में प्रचार की अनेक योजनाएँ रहती थीं, जिन्हें क्रियान्वित करने के लिए समय-समय पर वे हमारे साथ बैठकर विचार-विमर्श किया करते थे। उन्होंने बताया कि कथूरिया जी को जो राशि पुस्तकों की रायल्टी या पारितोषिक रूप में प्राप्त होती थी उसको वे आर्य समाज के प्रचार हेतु या परोपकारी कार्यों हेतु दान कर दिया करते थे। उनके स्वभाव में स्पष्टवादिता एवं प्रखरता विद्यमान थी। आपातकाल के दौरान वे जेल भी गये और समय-समय पर वे समाज के ज्वलंत मुद्दों पर भी अपना दृष्टिकोण एवं मंतव्य भी प्रस्तुत करते रहते थे। अंत में डॉ. कथूरिया जी के सुपुत्र डॉ. वरुण कुमार कथुरिया एवं समस्त परिवारजों को उपस्थित महानुभावों ने उनका ढांढस बंधाया। सांत्वना देकर शांति पाठ के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न हुई।

पंजीयन संख्या : RAJHIN(RNI)2000/2567
डाक पं. सं. : Jaipur City/264/2018-20

महान क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा

-: वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार :-

महान् देशभक्त एवं क्रांतिकारी शिरोमणि श्यामजी कृष्ण वर्मा स्वातंत्र्य समर के अप्रतिम योद्धा थे। स्वतंत्रता यज्ञ के लिए उन्होंने अपने आपको समर्पित किया हुआ था। इस याज्ञिक अग्नि का आधान किया था आग्नेय व्रती आग्नेय वस्त्र धारी महर्षि दयानन्द ने। यह स्वाधीनता का सर्वप्रथम उद्‌घोषक था। उसने ही अपने प्रवचनों तथा लेखन के माध्यम से इस अग्नि को प्रज्ज्वलित किया था। यज्ञ सामान्य अग्नि नहीं, अपितु स्वातंत्र्य यज्ञ की अग्नि थी जिसमें स्वाधीनता के पुजारी स्वेच्छा से आ-आ कर अपनी आहुतियां दे रहे थे। महर्षि दयानंद ने इसका आधान किया तथा क्रांतिकारियों ने इसमें अपनी आहुतियाँ देकर इसे सर्वव्यापी बनाया, बढ़ाया, चमकाया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भी अपना जीवन इस अग्नि को समर्पित कर दिया। श्यामजी महर्षि दयानन्द के प्रमुख शिष्य थे। महर्षि ने उन्हें विदेश जाने की प्रेरणा दी। महर्षि दयानन्द चाहते थे कि श्यामजी विदेश में जाकर भारतीय स्वतंत्रता की अलख जगाएं तथा वहां के कला-कौशल के आधार पर भारतीयों की निर्धनता के निवारणार्थ यत्न करें। महर्षि दयानन्द से श्यामजी की भेंट 1875 ई. में हुई तभी उन्होंने मुम्बई आर्य समाज की सदस्यता भी ग्रहण की जो कि महर्षि के द्वारा स्थापित सर्वप्रथम समाज था। 1883 ई. में महर्षि ने श्यामजी को अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का सदस्य मनोनीत किया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर, 1857 को सौराष्ट्र गुजरात प्रदेश के मांडनी ग्राम में श्री कृष्ण जी वर्मा के घर हुआ था। 1875 में उनका विवाह सेठ छबीलदास लल्लू भाई की सुपुत्री भानुमती से हुआ। 1877 में श्यामजी ने समाज सुधार के लिए उत्तरी तथा पश्चिम भारत की यात्राएं की। श्यामजी असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। 5 फुट 10 इंच लम्बा उनका गठीला शरीर तथा तेजस्वी मस्तक सभी को अपनी ओर आकृष्ट करता था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा अप्रतिम विद्वान् थे। संस्कृत साहित्य पर उनका असाधारण अधिकार था। इसके साथ ही उन्हें यूरोपीय संस्कृति तथा साहित्य को भी अच्छा ज्ञान था। वे अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य भाषाओं के भी ज्ञाता थे। अपने अगाध ज्ञान के आधार पर श्यामजी कुशल लेखक तथा प्रभावशाली वक्ता थे। उनके भाषण तथा लेख तथ्यों से भरपूर होते थे जो कि पाठकों तथा श्रोताओं पर अद्‌भुत प्रभाव डालते थे। लंदन के ट्राईड पार्क में उनके भाषण से प्रभावित होकर ही मैडम कामा क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हो गई थी।

श्यामजी के विचारों एवं कार्यों में दृढ़ता एवं स्पष्टता थी, जो उन्हें अपने गुरु महर्षि दयानन्द से सहजरूप में ही प्राप्त थी। विचारों की इसी दृढ़ता तथा स्पष्टता के कारण श्यामजी ने राष्ट्रीय आंदोलन का उचित मार्गदर्शन किया। श्यामजी ने अपने सार्वजनिक जीवन का प्रारंभ मुम्बई के समाज सुधार आंदोलन से किया। माधवदास रघुनाथ दास के द्वारा प्रारंभ किए गए विधवा विवाह आंदोलन में श्यामजी ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्वामी दयानन्द तो उनके प्रेरणा स्रोत थे ही। स्वामी जी के निर्वाण के उपरांत रूढ़िवादियों को उत्तर देने के लिए श्यामजी ही सक्षम थे। उनकी इसी विशेषता के कारण 1889 में पूना के पण्डितों की चुनौती का सामना करने के लिए जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे ने उन्हें सादर आमंत्रित किया था।

इसके पश्चात् श्यामजी ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को अपना लक्ष्य बनाया। उनका स्मरणीय कार्य है विदेशों में भी भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की सुदृढ़ आधारशिला रखना। वहां रहकर उन्होंने इस आंदोलन को दिग-दिगन्त तक पहुंचा दिया। श्यामजी के विषय में जर्मनी की पत्रिका 'दि जेनाक्रिफ्ट' ने लिखा था कि अंग्रेज

श्यामजी कृष्ण वर्मा के आंदोलन से उतने ही भयभीत है। जितने कि जर्मनी के द्वारा आक्रमण के भय से।

विदेशों में स्वाधीनता के आंदोलन को स्थायी रूप देने के लिए श्यामजी ने जुलाई 1905 में लंदन में 'इण्डिया हाऊस' खरीदा। इण्डिया हाऊस क्रांतिकारियों का अड्डा था। यही पर स्वतंत्रता के विषय में गुप्त मंत्रणाएं होती थीं जिनसे क्रांति की चिंगारी फूटती थी। 1905 में ही श्यामजी ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए 'इण्डियन सोशियोलोजिस्ट, लंदन' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। स्वाधीनता के विचारों के साथ-साथ इसमें सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के विषय में भी पर्याप्त सामग्री रहती थी। इस पत्र को सुदृढ़ एवं स्थायी करने के लिए 1905 में ही श्यामजी ने 'होमरूल सोसायटी' का गठन भी किया।

क्रांति के पक्षधर होने के साथ-साथ श्यामजी यह भी मानते थे कि बहिष्कार या असहयोग के द्वारा भी अंग्रेजी राज्य को निष्प्रभावी बनाया जा सकता था। महात्मा गांधी तो असहयोग आंदोलन के पक्षधर थे ही। श्यामजी ने भी गांधी जी के नेतृत्व में 1920-21 में चलाए जा रहे असहयोग आंदोलन का समर्थन किया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्वाधीनता आंदोलन को जो कुशल नेतृत्व प्रदान किया इससे राष्ट्रवादियों का क्षेत्र व्यापक होता गया। श्यामजी के प्रचार का जर्मनी प्रभृति यूरोपीय देशों में पर्याप्त प्रभाव पड़ा। वस्तुत: भारतीय राष्ट्रवासियों को जर्मन का नैतिक तथा सैनिक समर्थन मिलना श्यामजी के प्रचार का ही परिणाम था। विदेशों में श्यामजी को पर्याप्त ख्याति प्राप्त हुई।

श्यामजी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का सशक्त विरोध किया। उनके विरोध के कारण ही कई वर्षों तक एंग्लो अमेरिकन संधि न हो सकी। श्यामजी निर्भीक होकर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर लिखते थे।

अप्रैल 1912 में उन्होंने एक खुले पत्र में अमेरिकन प्रेजीडेण्ट टैफ्ट को इंग्लैण्ड के साथ संधि वार्ता के लिए धिक्कारा था क्योंकि उनकी दृष्टि में इंग्लैण्ड स्वयं दूसरे देशों को गुलाम बनाने वाला डाकुओं का शिरोमणि देश था। इस पत्र से प्रेरणा पाकर ही आयरिश मूल के अमेरिकियों ने ऐंग्लो अमेरिकन संधि के विरुद्ध आंदोलन किया था जिससे वह संधिवार्ता विफल हो गई। इस प्रकार श्यामजी का क्षेत्र भारत की स्वतंत्रता तक ही सीमित न था, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भी उनका प्रचुर वर्चस्व था।

1905 में श्यामजी ने भारत की पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य घोषित किया जबकि अन्य लोग औपनिवेशिक राज्य लेने के भी पक्षधर थे। इस सम्बन्ध में श्यामजी ने एक लम्बा लेख भी लिखा था। वे इंग्लैण्ड तथा भारत के सम्बन्ध को भेड़िये तथा भेड़ के संबंध की तरह देखते थे जिसमें भेड़िया किसी न किसी बहाने से भेड़ के प्राण लेने की सोचता रहता है। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किए जाने वाले अत्याचारों, आर्थिक, शोषण, राजनीतिक, दुरावस्था तथा नैतिक ह्रास का यथार्थ चित्रण किया। वस्तुत: श्यामजी के स्पष्ट चिन्तन तथा लेखनी ने राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा निर्धारित की। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उस प्रचार को निरस्त कर दिया जिसके कारण अनेक भारतीय भी अंग्रेजी राज्य के प्रशंसक थे। श्यामजी की स्पष्ट धारणा थी कि भारत के सर्वतोमुखी पतन तथा आर्थिक पिछड़ेपन के लिए अंग्रेजी राज्य ही उत्तरदायी है। इसका समाधान केवल पूर्ण स्वतंत्रता है। इसके लिए वे असहयोग एवं बहिष्कार को प्रमुख साधन मानते थे।

विदेशों में स्वाधीनता की ज्योति जलाते हुए भारत में भी श्यामजी ने राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। 1885 में रतलाम स्टेट के दीवान बने। 1888 में अजमेर नगर पालिका के अध्यक्ष बने। 1892 में मेवाड़ स्टेट कौंसिल के सदस्य बने तथा 1895 में जूनागढ़ स्टेट के दीवान बने।

1897 में लोकमान्य की गिरफ्तारी पर श्यामजी लंदन चले गए। 1899 में उन्होंने प्रेस स्वतंत्रता पर जार्ज बर्नार्ड शॉ का समर्थन किया। 1899 में ही ट्रांसवाला युद्ध में अंग्रेजों के विरुद्ध प्रेजीडेंट क्रूजर का समर्थन किया। 1908 में श्यामजी पेरिस गए। उन्होंने 1909 में हुतात्मा मदन लाल ढींगरा का समर्थन तथा 1911 में हार्डिंग बम विस्फोट पर क्रांतिकारियों का समर्थन किया। 1914 में उन्होंने जेनेवा के लिए प्रस्थान किया तथा 1919 में गांधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन का समर्थन किया।

इस प्रकार अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय स्वाधीनता के लिए समर्पित कर देने वाला भारत माता का यह सपूत 31 मार्च 1930 को चिर निन्द्रा में सो गया। 22 अगस्त 1932 को उनकी धर्मपत्नी भानुमती का भी देहावसान हो गया। श्यामजी की अस्थियां भारत की धरोहर थी। वह भारत को अब प्राप्त हो गयी।

॥ ओ३म् ॥
आर्य नीति

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक 5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुदित।

सम्पादक मण्डल
चक्रकीर्ति सामवेदी, घनश्यामधर त्रिपाठी
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
29052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
29804883 Vishwamaryam@rediffmail.com

आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति, आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित
-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.